Q. What do you mean by observation method? Explain its merits and demerits?

Ans:→ जब Watson महोदय ने व्यवहार को मनोविज्ञान की विषय वस्तु माना तब मनोविज्ञान की विधि निरीक्षण विधि माना गया। निरीक्षण विधि का अर्थ ऐसी विधि से जिसके द्वारा प्राणी के व्यवहार का अध्ययन भिन्न भिन्न परिस्थिति में तटस्थ भाव से किया जाता है। निरीक्षण करने वाला प्राणी के व्यवहार का अध्ययन उसी रूप में बार बार करता है जिस रूप में होता है। निरीक्षण विधि अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण विधि है। इस विधि में अनुसंधानकर्ता अध्ययन विषय को अपने सामने रखता है और उसके विभिन्न पक्षों का अवलोकन यथा संभव तटस्थ भाव से करता है। तथा निरीक्षण करके आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त करने का प्रयास करता है।

P.V young ने इसकी परिभाषाएँ देते हुए कहा है कि Observation is a Systematic and deliberate study through the eye of spontaneous accurances at the time they acure" इसी तरह oxford concise Dictionary के अनुसार "observation means accurate watching notting of phenomena as they accure in nature with regard to causes and effect or mutual relation.

इन परिभाषाओं से निरीक्षण विधि की निम्नलिखित विशेषताओं का संकेत मिलता है।

Merits of observation method

निरीक्षण विधि के गुणों का वर्णन करना वास्तव में

कार्य अत्यंत ही कठिन कार्य है। क्योंकि वास्तव में सर्व प्रचलित एवं सर्वमान्य विधि है, के कारण आजकल अनुसंधान कार्यों में इसकी उपयोगिता अत्यधिक बढ़ गयी है। संक्षेप में इसके मुख्य गुण निम्नलिखित हैं:—

1) वस्तुनिष्ठ विधि (Objective method) :→

इस विधि का प्रधान गुण है कि यह वस्तुनिष्ठ वस्तुनिष्ठ विधि है क्योंकि निरीक्षणकर्ता प्राणी के व्यवहार का अध्ययन तटस्थभाव से उसी रूप में करता है जिस रूप में वह व्यवहार होता है। यहाँ निरीक्षण कर्ता न तो दूसरे के कथन पर विश्वास करता है न किसी तरह का अनुमान करता है। इस विधि द्वारा प्राप्त परिणाम ~~विश्वसनीय~~ विश्वसनीय होता है।

② पुनरावृत्ति (Repetition) :→

इस विधि में पुनरावृत्ति का गुण पाया जाता है। क्योंकि व्यवहार अधिक स्थिर होता है। इसलिए इसको बार बार निरीक्षण करना संभव होता है। जैसे :- चूहे को पकड़ते समय बिल्ली का जो व्यवहार होता है वह प्रायः सभी परिस्थिति में समान होता है। अतः निरीक्षणकर्ता बिल्ली के इस व्यवहार का बार बार अध्ययन कर सकता है।

③ प्रमाणीकरण (verification) :→

निरीक्षण विधि के की मुख्य बात यह है कि इस विधि से प्राप्त सूचनाओं सत्यापन को भी आसानी से आँका जा

Scanned with CamScanner

सकता है। अनुसंधानकर्ता एक ही सामाजिक घटना को कई बार निरीक्षण करके उस घटना का सत्यापन परख सकता है जो कि अन्य विधि में यह सुविधा प्राप्त नहीं है।

(4) व्यापक क्षेत्र (Wide Scope) :→

इस विधि का अध्ययन विषय का क्षेत्र काफी व्यापक है। जैसे:→ पशु, बच्चे, गूँगे, बहरे, पागल आदि का अध्ययन अन्य विधि द्वारा संभव नहीं है। लेकिन निरीक्षण विधि द्वारा कुछ ऐसे विषयों का अध्ययन संभव होता है जिसका अध्ययन कि प्रयोगात्मक विधि से संभव नहीं है। इस तरह यदि वर्ग विभेद, साम्प्रदायिक दंगे आदि का निरीक्षण करने का एक मात्र विधि निरीक्षण ही है।

(5) समय तथा श्रम की बचत (Time and labour Saving) :→

इस विधि में समय तथा श्रम की काफी बचत होती है। क्योंकि एक ही साथ अनेक व्यक्तियों का अध्ययन किया जाता है। लेकिन अन्य विधि में इस तरह की बात नहीं है। अन्य विधि में एक ही व्यक्ति पर अध्ययन एक बार में संभव है। इस प्रकार निरीक्षण विधि में काफी समय तथा श्रम की बचत हो जाती है।

(6) मात्रात्मक अध्ययन (Quantitative Study) :→

इस विधि से ऐसे आँकड़ा प्राप्त होता है। जिसका मात्रात्मक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा है सकता है और

इस विश्लेषण के अवलब आधार पर विश्वसनीय निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

(7) परिकल्पना के निर्माण में सहायक (Helpful in the formation of hypothesis)

परिकल्पना के निर्माण में सहायक होने का गुण विधि में पाया जाता है। क्योंकि निरीक्षणकर्ता अनेक घटनाओं का निरीक्षण करता है। और उसका अनुभव बढ़ता जाता है और अनुभवों का स्रोत परिकल्पनाओं का निर्माण का मुख्य साधन है।

(8) इस प्रकार स्पष्ट है कि निरीक्षण विधि में कुछ ऐसे गुण पाये जाते हैं जिनके कारण यह विधि अन्य विधि की तुलना में कहीं अधिक वैज्ञानिक है। फिर भी इसे पूरी तरह वैज्ञानिक नहीं माना जा सकता है क्योंकि इसमें कुछ दोष भी देखने को मिलता है।

Limitation सीमायें

① चेतन अनुभव के अध्ययन की अयोग्यता →

इस विधि द्वारा चेतन अनुभूति का अध्ययन संभव नहीं है। इस विधि द्वारा चेतन अनुभव का अध्ययन नहीं हो पाता है। इसलिए प्रयोगात्मक विधि में जब हम मनुष्य पर प्रयोग करते हैं तो उससे introspective report लेते हैं। इसका एक कारण यह है कि मनुष्य का व्यवहार इतना जटिल होता है कि इसका विश्लेषण

केवल निरीक्षण से हमेशा संभव नहीं होता है।

② अध्ययन में कठोर नियंत्रण का अभाव :→

इसमें किसी विषय का अध्ययन अनियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है। अतः किसी परिणाम के कारण का ठीक ठीक पता नहीं चल सकता है। इसका मुख्य कारण यह है कि अध्ययन विषय पर एक ही साथ कई चरों का प्रभाव पड़ सकता है। जैसे:→ मान लिया जाए कि कोई बच्चा रो रहा है। वह क्यों रो रहा है? इसका पता लगाना कठिन होता है। यह तभी संभव है जब परिस्थिति नियंत्रित हो। निरीक्षण विधि में नियंत्रण का अभाव रहता है।

③ भिन्न अनुभवों की अभिन्न अभिव्यक्ति :→

कभी कभी यह विधि व्यवहार की समुचित व्याख्या करने में सफल नहीं होती है। इसका कारण यह है कि कभी कभी दोगुना चेतन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति एक ही तरह के व्यवहार के रूप में होती है। जैसे:→ मान लिया कोई रोता है तो व्यक्ति दुःखद और सुखद दोनों स्थिति में रोता है। अतः व्यक्ति की आँखों में आँसू देखकर निश्चित रूप से यह कहना कठिन है कि यह दुःख के आँसू है या सुख के।

④ अस्वाभाविक अध्ययन :→

इस विधि का यह भी दोष है कि इसके द्वारा जो भी अध्ययन किया जाता है वह स्वाभाविक नहीं होता है। क्योंकि निरीक्षणकर्ता की उपस्थिति से प्राणी

का व्यवहार अस्वभाविक बन जाता है। अर्थात देखा जाता है कि व्यक्ति का व्यवहार जैसा अकेला में होता है वैसा दूसरे लोगों की उपस्थिति में नहीं होता है। इस दोष को हटाने के लिए छुपे का प्रयोग किया जाता है। निरीक्षणकर्ता इस ध्यान से प्राणी के व्यवहार का अध्ययन करता है कि प्राणी उसे देख नहीं सके और उसका व्यवहार स्वभाविक हो सके।

⑤ अनावश्यक सूचनाओं का संकलन :→

इस विधि द्वारा अध्ययन का स्वरूप विशिष्ट नहीं होता है। अतः इसमें अनावश्यक आँकड़ों के संकलन में अधिक अनावश्यक सूचना के संकलन की पर्याप्त संभावना रहती है।

⑥ सीमित विश्वसनीयता :→

इस विधि से संबंधित स्थितियाँ प्रायः मानक नहीं होती अतः इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्षों का सत्यापन भी नहीं हो पाता। इसलिए इसके विश्वसनीयता का स्तर सीमित ही रहता है।

⑦ सीमित भविष्य कथन :→

इस विधि द्वारा अधिकांश ज्ञान का स्तर उच्च वैज्ञानिक श्रेणी का नहीं होता। अतः इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्षों का आधार पर केवल सीमित ही भविष्य कथन किया जा सकता है।